Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

संगीत शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद की भूमिका

DR. GURPREET SINGH
Lecturer in Music, A.M.S.S.S. Jalalana

सार: *राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद देश के सर्वोच संस्थाओं में से एक है जिसका प्रमुख ध्येय देश में शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान तथा प्रशिक्षण गतिविधियों का संचालन करना है ! परिषद की स्थापना सवतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश में विद्यालयी शिक्षा से संबंधित विषय क्षेत्रों में स्वयं अनुसंधान करना, अनुसंधान कार्यों के लिए सहायता व प्रोत्साहन देना, आदर्श पाठ्यपुस्तकों एवं अनुपूरक सामग्री का निर्माण एवं प्रकाशन करना, नवाचारात्मक शैक्षिक तकनीकी व पद्धतियां विकसित तथा प्रसारित करना और प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनिक के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक केंद्रक अभिकरण के रूप में कार्य करना आदि उदेशयों की प्राप्ति हेतु की गयी ! परिषद द्वारा संगीत शिक्षा के पाठ्यक्रम पर आधारित संगीत के सैधान्तिक व प्रायोगिक पक्ष पर दृश्य-श्रव्य प्रलेखों का निर्माण किया जाता है। इसी प्रकार भारतीय संगीत के विभिन्न कक्षाओं के पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तकों की रचना तथा प्रकाशन भी परिषद द्वारा किया जाता है। इसके अतिरिक्त परिषद के प्रयासों में संगीत अध्यापकों की योग्यता स्तर संबंधी अनुसंधान, संगीत के पाठ्यक्रम तथा उपलब्ध शैक्षिक सामग्री की समीक्षा करना, कला उत्सव द्वारा सगीत कला रूपों का संरक्षण व विद्यालयों में कला शिक्षा की स्थिति पर अध्ययन हेतु अनुसंधान आदि शामिल है!*

बीज शब्द- *अनुसंधान, प्रलेख , कला ,संगीत, परिषद*

भूमिका

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुंसधान प्रशिक्षण परिषद देश में शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान तथा प्रशिक्षण गतिविधियों द्वारा इसके विकास हेतु कार्यशील है। परिषद स्वतंत्रता प्राप्ति के शुरूआती दशकों में स्थापित किये गए सात संस्थानों जैसे-केन्द्रीय शिक्षा संस्थान (1947), केन्द्रीय पाठ्यपुस्तक अनुसंधान ब्यूरो (1954), केन्द्रीय शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन ब्यूरो (1954), माध्यमिक शिक्षा विस्तार कार्यक्रम निदेशालय (1958) (प्रारम्भ में 1955 में अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के रूप में स्थापित), राष्ट्रीय बेसिक शिक्षा संस्थान (1956), नेशनल फंडामेंटल एजूकेशन सेंटर (1956) और राष्ट्रीय ऑडियो -विजुअल शिक्षा संस्थान (1959) के एकीकरण के फलस्वरूप अस्तित्व में आया। शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 27 जुलाई 1961 को परिषद की स्थापना की घोषणा की गई। 1 सितम्बर 1961 को परिषद ने औपचारिक रूप से कार्य करना शुरू किया[1]

उद्देश्य

सरकार द्वारा परिषद की स्थापना मूलतः विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु केन्द्र और राज्य सरकारों की नीतियों और कार्यक्रमों में सहायता और परामर्श देने हेतु की गई थी। परिषद के संविधान में वर्णित उद्देश्य निम्नलिखित हैः-

- विद्यालयी शिक्षा से संबंधित विषय क्षेत्रों में स्वयं अनुसंधान करना, अनुसंधान कार्यों के लिए सहायता तथा प्रोत्साहन देना और उनके मध्य समन्वय स्थापित करना।
- आदर्श पाठ्यपुस्तकें, अनुपूरक सामग्री, समाचार पत्र, पत्रिकाएं एवं अन्य तत्संबंधी साहित्य का निर्माण तथा प्रकाशन करना व शैक्षिक किट, मल्टीमीडिया डिजिटल सामग्री आदि विकसित करना।
- अध्यापकों के लिए सेवा पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण आयोजित करना।
- नवाचारात्मक शैक्षिक तकनीकी और पद्धतियां विकसित और प्रसारित करना।
- राज्यों के शिक्षा विभागों, विश्वविद्यालयों, गैर-सरकारी संगठनों और अन्य शैक्षिक संस्थाओं के साथ सहयोग करना।
- विद्यालयी शिक्षा से संबंधित सभी मामलों में विचारों और सूचनाओं के आदन प्रदान केन्द्र के रूप में कार्य करना।
- प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनिक के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक केंद्रक अभिकरण के रूप में कार्य करना।[2]

वर्तमान में परिषद देश के विभिन्न भागों में स्थित संस्थानों अर्थात उन्नीस विभागों, प्रभागों और प्रकोष्ठों वाले नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, भोपाल, भुवनेशवर, मैसूर और एन.ई.आर.आई.ई., उमियम (मेघालय) स्थित पांच क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ई.) और दो केन्द्रीय संस्थानों अर्थात भोपाल स्थित पं. सुंदरलाल शर्मा केन्द्रीय व्यवसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)और नई दिल्ली में स्थित केन्द्रीय शैक्षिक प्रोद्यौगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी) के साथ उन्नति की ओर अग्रसर है।[3]

संघटक इकाईयां

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.), नई दिल्ली, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोद्यौगिकी संस्थान, नई दिल्ली, पं. सुदर लाल शर्मा केन्द्रीय व्यवसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर, पूर्वोतर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, उमियम (मेघालय)।[4]

संगीत शिशा के क्षेत्र में भूमिका

शैक्षिक प्रोद्यौगिकी के माध्यम से संगीत शिक्षा का प्रसार

परिषद डिजिटल संसाधनों जैसे ऑडियो, वीडियो, ई-बुक, ई-पाठशाला, वेब पोर्टल (http://epathshala.nic.in, http://epathshala.gov.in) और मोबाईल ऐप्प के द्वारा प्रसारित ई-सामग्री के द्वारा शिक्षण अधिगम में प्रौद्योगिकी के माध्यम से एक नवीन क्रांति का संचार कर रहा है। इस ई-सामग्री का प्रसारण स्वयं प्रभा, डी.टी.एच. प्रसारण सेवा, सी.आई.ई.टी. के कार्यक्रम तथा दूरदर्शन के माध्यम से किया जाता है ।[5] इन डिजिटल संसाधनों द्वारा प्रसारित ई- सामग्री में शास्त्रीय संगीत संबंधी कार्यक्रमों का निर्माण तथा प्रसारण भी समय समय पर किया जाता है उदाहरणस्वरूप परिषद् के अधिकारिक यू-टूयब चैनल पर रागों पर आधारित वीडियोज उपलब्ध है जिनका निर्माण परिषद द्वारा किया गया है । इन वीडियोज में विशेषज्ञों द्वारा शास्त्रीय संगीत के रागों के परिचय, आरोह, अवरोह, पकड़, राग की विशेषताओं का विस्तारपूर्वक वर्णन तथा बंदिशों की प्रयोगात्मक प्रस्तुतियां शामिल है। इसके अतिरिक्त तालों पर आधारित वीडियोज भी उपलब्ध है जिनमें तालों का परिचय विस्तार पूर्वक समझाया गया है। इन वीडियोज का निर्माण शैक्षिक प्रयोजन हेतु किया जाता है जिससे छात्र तथा अध्यापक दोनों लाभान्वित हो सकते हैं। रागों के अतिरिक्त भारतीय संगीत के प्रसिद्ध संगीतज्ञों जैसे तानसेन के जीवन पर आधारित ई-सामग्री का भी निर्माण परिषद् द्वारा किया गया है। परिषद् के यूटयूब चैनल पर शास्त्रीय संगीत पर आधारित पर्याप्त मात्रा में वीडियोज (46) उपलब्ध है जिनके प्रमुख शीर्षक इस प्रकार है- राग भूपाली, राग यमन, काफी, मारवा, भैरव, विहाग, खमाज, देस, दुर्गा, भीमप्लासी, दरबारी कान्हड़ा, सूहा, श्री रामकली, शंकरा, शुद्ध कल्याण, सिन्दूरा, सोहनी, तिलक कामोद, वृन्दावनी सांरग, रागेश्वरी, अहीर भैरव, अड़ाना, बसन्त, भटियार, जयजयवंती, हिन्डोल, हंसध्वनि, हमीर, कामोद, मालकौंस, मियां मल्हार, पीलू, पूरिया, आसावरी, तोड़ी, स्टोरी ऑफ़ तानसेन इत्यादि।[6] इन वीडियोज का प्रयोग पाठ्यक्रम के रागों के शिक्षण हेतु कक्षा कक्ष में किया जा सकता है। परिषद का यह प्रयास अत्यन्त उपयोगी है

संगीत संबंधी पुस्तकों की रचना तथा प्रकाशन

परिषद द्वारा भारतीय संगीत के विभिन्न कक्षाओं के पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तकों की रचना तथा प्रकाशन किया जाता है। इसके अतिरिक्त संगीत के शिक्षकों के लिए शिक्षक संदर्शिका पुस्तकों का निर्माण भी किया जाता है। यह कार्य परिषद के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के कला एवं सौन्दर्य प्रभाग द्वारा किया जाता है।[7] विभाग की वर्ष 2018-19 की कार्य-योजना के बिन्दू 23.02 और 23.03 में क्रमशः कक्षा ग्याहरवीं और बाहरवीं के लिए पाठ्यपुस्तकों की रचना तथा प्रकाशन और कक्षा ग्याहरवीं के लिए संगीत विषय की ई- सामग्री का निर्माण करना अनुमोदित है। परिषद द्वारा संगीत की विद्यालयी शिक्षा से संबंधित अध्ययन-अध्यापन सामग्री का निर्माण किया जाता है। उदाहरण के लिए विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'संगीत शिक्षक संदर्शिका उच्च प्राथमिक स्तर (छठी से आठवीं) एक महत्वपूर्ण रचना है जो विद्यार्थी तथा शिक्षक दोनों के लिए अत्यन्त लाभकारी है। यह पुस्तक विभाग के वेबसाईट पर ऑनलाईन उपलब्ध है।[8]

सेवाकालीन संगीत अध्यापकों की योग्यता स्तर संबंधी अनुसंधान

परिषद द्वारा स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विविध पहलुओं पर शैक्षिक अनुसंधान का आयोजन किया जाता है। अनुसंधान से प्राप्त तथ्यों तथा अंर्तदृष्टि नीतियों और कार्यक्रमों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में संगीत की अहम भूमिका है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए परिषद द्वारा समय-समय पर संगीत अध्यापकों के योग्यता स्तर पर अनुसंधान किया जाता है। वर्ष 2016-17 में परिषद् द्वारा दिल्ली, हरियाणा और महाराष्ट्र के विद्यालयों में कार्यरत उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तर (6-10) के सेवाकालीन संगीत अध्यापकों (गायन और वाद्य संगीत) की योग्यता स्तर का आंकलन करने के लिए एक अध्ययन किया गया। इस शोध में पाया गया कि अध्यापक अपने विषय में कुशल हैं तथा विद्यार्थियों को संगीत वाद्ययंत्रों को बजाने तथा संगीत के विभिन्न रूपों को गाने में सक्षम बनाने हेतु सराहनीय प्रयास किए गए। अध्ययन में संगीत के लिए विद्यालयों में समय-सारिणी में पर्याप्त समय तथा संगीत सीखने की सुविधाओं तथा बुनियादी संरचना में सुधार का सुझाव दिया गया। इसके अतिरिक्त यह भी पाया गया कि कक्षा 10वीं में अन्य विषयों पर अधिक जोर दिया जाता है तथा संगीत को समय सारिणी में पर्याप्त समय नही मिलता। अध्ययन में इस बात पर बल दिया गया कि संगीत अध्यापक को दृश्य-श्रव्य सामग्री के रूप में उपलब्ध असंख्य संसाधनों का लाभ उठाने के लिए तकनीकी रूप से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।[9]

संगीत के पाठ्यक्रम तथा उपलब्ध शैक्षिक सामग्री जैसे पाठ्यपुस्तकों आदि की समीक्षा करना:

परिषद द्वारा अध्यापकों तथा अन्य पणधारकों से प्रतिक्रिया एकत्र करने के उपरान्त राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचा 2005 के अनुवर्तन के रूप में परिषद द्वारा विकसित पाठ्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा की जाती है। इसी श्रृंखला में वर्ष 2017-18 में विभिन्न शिक्षा बोर्डों में उच्च माध्यमिक स्तर कक्षाओं के संगीत के पाठ्यक्रम तथा उपलब्ध शिक्षण सामग्री जैसे पाठ्यपुस्तकों आदि की समीक्षा की गई। समीक्षा उपरान्त पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों को और अधिक समृद्ध बनाने हेतु सुझाव दिए गए।[10]

विद्यालयों में कला शिक्षा की स्थिति पर अध्ययन हेतु अनुसंधान

परिषद् द्वारा समय-समय पर भारत के विभिन्न भागों में कला शिक्षा के विषयों जैसे संगीत, नृत्य, नाटक आदि की स्थिति का अध्ययन करने हेतु अनुसंधान की जाती है। वर्ष 2017-18 में परिषद के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान मैसूर द्वारा विद्यालयों में अध्ययन- अधिगम की प्रक्रिया का विशलेषण करने, कला शिक्षा के अध्यापकों द्वारा कला के विभिन्न रूपों के अध्यापन में आने वाली समस्याओं के अध्ययन, कला शिक्षा के विद्यार्थियों और अध्यापकों की अवधारणाओं और कला शिक्षा के अध्यापन में माता-पिता की भागीदारी के बारे में जानने के उद्देश्य हेतु दक्षिण भारत के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन किया गया।[11] इस अध्ययन में राज्य सरकार के विद्यालयों और केन्द्रीय विद्यालयों के मुख्य अध्यापक, अध्यापक, विद्यार्थी और माता-पिता शामिल थे। इस अध्ययन में पाया गया कि संगीत विषय को राजकीय तथा केन्द्रीय विद्यालयों द्वारा बहुत कम महत्व दिया जाता है। माता-पिता संगीत विषय को अधिक महत्व नहीं देते। विद्यार्थियों में संगीत विषय में कैरियर बनाने हेतु सीमित जागरूकता है तथा विद्यार्थियों में संगीत के प्रति रूचि कम है। इसके अतिरिक्त अध्ययन में पाया गया कि सरकारी विद्यालयों में संगीत शिक्षा सामग्री, आधारभूत संरचना, संगीत कक्षों, संगीत शिक्षकों, संगीत कक्षों में सूचना और संचार प्रोद्यौगिकी के उचित एकीकरण तथा उचित संसाधनों की कमी है। केन्द्रीय विद्यालय तथा राजकीय विद्यालय दोनों में से अधिकांश विद्यालयों में परिषद अथवा राज्य शिक्षा बोर्डों द्वारा निर्धारित उचित पाठ्यक्रम नहीं हैं। निष्कर्ष रूप में अध्ययन में यह पाया गया कि संगीत जैसे कला विषय को आदर्श कला कक्ष में अपना उचित महत्व नहीं मिल रहा।[12]

परिषद के कला एवं सौन्दर्यबोध शिक्षा विभाग के प्रयास

कला एवं सौन्दर्यबोध शिक्षा विभाग का सृजन 24 नवंबर 2005 को एक पृथक विभाग के रूप में किया गया ताकि विद्यालयों में कला के सभी रूपों को बढ़ावा देने की संकल्पना के साथ इसे देश की शिक्षा प्रणाली की मुख्यधारा में लाया जा सके।

विभाग के प्रमुख कार्य

- विद्यालय के साथ-साथ अध्यापक शिक्षा में कला शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान आयोजित करना।
- संगीत और नृत्य में विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों के लिए पाठ्यपुस्तकों, अध्यापक हस्तपुस्तिकाओं, प्रशिक्षण सामग्री, पूरक सामग्री, शिक्षण-अधिगम सामग्री सहित, श्रव्य-दृश्य सामग्री, मल्टी मीडिया कार्यक्रम, प्रक्रिया दस्तावेज आदि तैयार करना।
- कला शिक्षा में विभिन्न स्तरों/चरणों के सेवाकालीन शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षकों हेतु क्षमता निर्माण कार्यक्रम तथा कला शिक्षा में सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम का संचालन
- समय-समय पर पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या की समीक्षा और विकास करना।
- कला शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्यरत विभिन्न राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के साथ एक मजबूत नेटवर्क विकसित करना।
- विद्यालयी शिक्षा की पाठ्यचर्या में कला शिक्षा समेकित करना।[13]

कला उत्सव द्वारा पारम्परिक कला रूपों का संरक्षण

कला उत्सव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वर्ष 2015 शुरू की गई एक ऐसी पहल है जिसका उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभा की पहचान, पोषण व मंच प्रदान करना और शिक्षा में कला को बढ़ावा देना है। कला शिक्षा के संदर्भ में की जा रही यह पहल राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2005 की अनुशंसाओं पर आधारित है। इसके द्वारा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा के कला रूपों जैसे-संगीत, नाटक, नृत्य इत्यादि का संरक्षण तथा विकास हो रहा है। कलाओं के इस उत्सव का प्रारम्भ 2015 में हुआ। तदानुपरांत इसका आयोजन प्रत्येक वर्ष किया जा रहा है। इसकी प्रतियोगिता संरचना को इस प्रकार से समझा जा सकता है।

विद्यालय स्तर > खण्ड स्तर > जिला स्तर > राज्य स्तर > राष्ट्रीय स्तर

कला उत्सव सामान्य विद्यार्थियों और विशेष आवश्यकता समूह वाले विद्यार्थियों को एक समन्वित मंच उपलब्ध करवाता है। जहां पर वे एक साथ अपनी क्षमताओं का उत्सव मानते है।[14]

प्रतियोगिता	पुरस्कारों की संख्या
संगीत गायन	1 छात्रा 1 छात्र
संगीत वादन	1 छात्रा 1 छात्र
नृत्य	1 छात्रा 1 छात्र
चित्रकला	1 छात्रा 1 छात्र

पात्रता:- विभिन्न राज्यों तथा संघ शासित प्रदेशों के सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालय, गैर सरकारी विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय,रेलवे विद्यालयों में पढ़ने वाले कक्षा 9वीं, 10वीं, 11वीं और 12वीं कक्षा के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं।[15]

पुरस्कार:- प्रत्येक स्तर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र प्रदान किए जाते हैं। प्रत्येक कला रूप में पुरस्कार राशि निम्नलिखित है:-

प्रथम पुरस्कार-25,000/-

द्वितीय पुरस्कार-20,000/-

तृतीय पुरस्कार 15,000/-

वर्ष 2017 में राष्ट्रीय स्तर पर कला उत्सव में भाग लेने वाले बच्चों के आंकड़े-

भाग लेने वाले बच्चों की संख्या- 1073

विशेष आवश्यकता वाले प्रतिभागी बच्चों की संख्या-121

भाग लेने वाली टीमों की संख्या-143

प्राप्त ऑनलाइन परियोजनाओं की संख्या- 142[16]

परिषद द्वारा कला उत्सव का आयोजन प्रत्येक वर्ष किया जाता है। कला उत्सव में संगीत गायन और वादन की श्रेणी में शास्त्रीय संगीत शैली को भी मान्यता दी गई है। प्रतिभागी विद्यार्थियों द्वारा शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुतियां दी जाती है। नृत्य के भी शास्त्रीय रूपों का प्रदर्शन किया जाता है। इस प्रकार कला उत्सव के माध्यम से विद्यार्थियों में शास्त्रीय संगीत के प्रति रूचि पैदा की जा रही है तथा शास्त्रीय संगीत के विद्यार्थियों को मंच प्रदान करने का यह सरहानीय प्रयास है जिससे सामान्य तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चे लाभविन्त हो रहे हैं।[17]

इस प्रकार परिषद् विद्यालयी शिक्षा में संगीत के शिक्षण पक्ष को समृद्ध बनाने हेतु अनुसंधान, सहायक सामग्री निर्माण, पाठ्यपुस्तकों तथा पाठ्यक्रमों का निर्माण एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के द्वारा प्रयासरत है।

संदर्भ

1. वार्षिक प्रतिवेदन, वर्ष 2017-18, पृष्ठ 1
2. वही, पृ.1
3. वही, पृ.1
4. वही, पृ.9
5. वही, पृ. 41
6. www.youtube.com/NCERT official.
7. www.Ncert.nic.in/departments/nie/deaa/activities/current-Proz/current Project.html
8. www.ncert.nic.in/Publication/Miscllaneous/Pdf-files/Sangeet-Shikshak-Sandarshika.pdf.
9. वार्षिक प्रतिवेदन, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद्, वर्ष 2017-18, पृ. 59
10. www.ncert.nic.in/department/nic/deaa/activities/Past-Proj/Project.html.
11. वार्षिक प्रतिवेदन, वर्ष 2017-18, पृ. 72
12. वही, पृ. 72-73
13. वही,पृ. 15
14. Kalaustav.in/
15. Kalaautsav.in/
16. वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2017-18 ,पृ 160
17. वही, पृ. 160